74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर

माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन

डा0 डी0आर0 सिंह
कुलपति

चन्द्रशेखर आजाद
कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन एवं कृषक सम्मान समारोह

सम्मानीय कृषक बन्धुओं, शिक्षक, वैज्ञानिक, कर्मचारीगण एवं मेरे साथियों, आज हम अपना 74वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। इस अवसर पर भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों जिनके द्वारा वर्षों के संघर्ष के बाद ब्रिटिश शासन से हमें आजादी मिली, मै अपने आपको गौरान्वित महसूस कर रहा हूं कि उन स्वतत्रंता सेनानियों में से एक अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जिनके नाम पर यह विश्वविद्यालय बना है, उसके कुलपति बनने का मुझे अवसर मिला। विश्वविद्यालय परिवार की ओर से मै उन सभी योद्धाओं को नमन करता हूं, श्रृद्धांजली अर्पित करता हूं। जिनकी वजह से हम इस दिन को मना रहे है। मेरी आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाईयां।

आजादी के बाद से देश में बहुआयामी विकास हुआ है तथा इसमें कुछ शानदार उपलब्धियां विश्व पटल पर अंकित हैं। इस कोरोना काल नें हमें अपने आपको पुनः परिभाषित एवं प्राथमिकताओं में बदलाव के लिय प्रेरित किया है। कोरोना महामारी से निपटने में जहां एक तरफ मेडिकल डाक्टर, नर्स आदि मोर्चा सम्भाले हुये हैं वहीं दूसरी तरफ जन–मानस के स्वास्थ्य, रक्षा, भोजन आदि जीवन–दायिनी आवश्यकताओं एवं खाद्य श्रृंखला को मजबूती प्रदान करने में हमारे कृषक बन्धुओं का अतुलनीय योगदान है। हमारी खाद्य पोषण एवं आन्तरिक सुरक्षा में इन योद्धाओं की भूमिका अति प्रशसनीय रही है। इसे दृष्टिगत रखते हुये मेरे मन में आया कि क्यों न हम सब मिलकर इस स्वतंत्रता दिवस पर अपने कृषक भाइयों को सम्मानित करें जिन्होने कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में विविध विधाओं का प्रयोगकर कीर्तिमान बनाये है साथ ही अन्य कृषक भाइयों के लिए प्रेरणास्रोत बने है। आपको हम बताना चाहते हैं कि कृषि ही हमारा जीवन है पशु हमारा धन है। यह वाक्य हमारे मुख्य भवन पर अंकित है। यह इस बात का ध्योतक है कि हम कर्म, वचन, सृजन, से कृषि विकास एवं आपके स्वाबलम्बन के लिए समर्पित हैं।

यह आप लोगों की सतत् लगन मेहनत एवं नवीन प्रजातियों, एवं तकनीक ग्राहयता ही है। जिसके द्वारा आप हमने शोध एवं विकास के क्षेत्र में शानदार सफलताऐं हासिल की हैं। हमने अधिक उपज देने वाली रोग व्याधि अवरोधी प्रजातियों, सिंचाई सुविधा एवं संसाधनों में वृद्धि एवं कृषि उत्पादक अवयवों की सुगम आपूर्ति, आधारभूत ढांचों के सुदृणीकरण द्वारा स्वाधीन होने के बाद से खाद्यान्नों में 5 गुना, औद्यानिक फसलों में 9 गुना, मछली में 12.5 गुना, दुध में 9 गुना एवं अण्डा उत्पादन के क्षेत्र में 39 गुना वृद्धि हासिल हुई है, इस वृद्धि में हमारे विश्वविद्यालय एवं प्रदेश के किसानों का प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हमारा देश आज खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं अपितु अब हम इसे विभिन्न देशों को निर्यात भी कर रहें हैं। बासमती चावल निर्यात में विश्व में प्रथम स्थान तथा कुल कृषि वस्तुओं के निर्यात में 21 प्रतिशत की साझेदारी रखती है। यह सफलता हमें अपने कृषक भाइयों के द्वारा नयी बासमती प्रजातियों को त्वरित रूप से अपनाने के कारण ही मिली है। मसालों के निर्यात में भी हम अग्रणी है।

खाद्यान्न उत्पादन में 11.8% कृषि अन्तर्गत क्षेत्रों के साथ 20% खाद्यान्न उत्पादन कर हमारा प्रदेश देश में प्रथम स्थान रखता है। तिलहन, दलहन उत्पादन के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया गया है। नेशनल मिशन ऑन एग्रीकल्चरल एक्सटेन्सन एंड टेक्नोलॉजी के अर्न्तगत कृषि प्रसार, ई–गर्वनेन्स, मेकेनाइजेसन, सीड एंड प्लान्टिग मेटेरियल के लिए भारत सरकार द्वारा प्रदेश को वित्तीय सहायता दी जा रही है। कृषि यन्त्रीकरण योजना के अन्तर्गत विभिन्न यन्त्रों पर 40 से 80 % अनुदान दिया जा रहा है।

नेशनल मिशन फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर के अन्तर्गत प्रदेश को भारत सरकार द्वारा मिशन मोड में रेनफेड एरिया डेवलपमेन्ट, परम्परागत कृषि विकास, नमामि गंगे, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजनाओं के माध्यम से सतत कृषि उत्पादकता को जैविक खेती के रूप में बढ़ावा देना है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत हर खेत को पानी की व्यवस्था के साथ ही पर–ड्राप मोर क्रॉप एवं इन्टीग्रेटेड वाटरसेड डेवलपमेन्ट प्रोग्राम पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना द्वारा अनुदान की DBT द्वारा सीधे किसान के खातों में दी जा रही है। जिसकी सहायता से कृषक परिवार की लवलीहुड एवं सही समय से कृषि इनपुट की खरीददारी में सहायता मिल रही है। प्रदेश सरकार ने भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में सोलर फोटो वोल्टैइक सिंचाई पम्प योजना चलाई जा रही है। बीहड़ एवं बंजर भूमि सुधार कर कृषि योग्य बनाकर भूमिहीन कृषकों को देने के लिए पं0 दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना, वर्षा जल संचयन हेतु खेत तालाब एवं स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली पर भी सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

भारत एवं दक्षिण एशिया के देशों के लिए चावल अनुसंधान कार्य हेतु अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान सस्थान फिलीपींस का प्रथम क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणासी में स्थापित किया गया है। इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय आलू अनुसंधान केन्द्र पेरू द्वारा आगरा में अपना क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। इससे प्रदेश के कृषि विकास में आशातीत सफलता मिलेगी। इस कोरोना काल में आर्थिक एवं मानव संसाधनों की कमी से हम सभी जूझ रहे हैं। फिर भी विश्वविद्यालय ने अपने विकास की गति को कम नहीं होने दिया है। हमने इसी समय कई महत्वपूर्ण कार्यों को विभिन्न संस्थाओं/समाज सेवियों के माध्यम से सम्पादित किये हैं। रोटरी क्लब इंडस्ट्री की मदद से 10 छात्रावासों में ब्रांडेड वाटर कूलर की स्थापना, मुख्य द्वार से सड़क के दोनों तरफ ऐतिहासिक तालाब तक सौन्दरीकरण एवं इंटरलॉकिंग का कार्य चल रहा है। इसके साथ ही छात्राओं हेतु मुख्य भवन में महिला कर्म्फट रूम की स्थापना का कार्य शीघ्र प्रारम्भ हो रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा शोध प्रसार एवं अनुभव साझेदारी को जन–मानस, छात्र–छात्राओं, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, प्लानर तक पहुँचाने हेतु **"कृषि कायाकल्पिका"** नामक पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन माननीय कृषि मन्त्री श्री सूर्य प्रताप साही द्वारा किया जा चुका है। पोस्ट कोविड–19, ट्रांसफॉरमेशनल एग्रीकल्चर बुक भी प्रकाशित हो चुकी है।

कृषकों को नवीनतम तकनीकी, व्यवसाय, व्यापार सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकार ने विभिन्न एप बनाये हैं जिनके द्वारा कृषक भाई सही समय, सही उत्पादन अवयवों, सही तरीका, सही प्रबन्धन एवं सही बाजार के बारे में त्वरित जानकारी प्राप्त कर अपनी उपज एवं आय बढ़ाने में मदद ले सकते हैं इन एपों में PUSA KRISHI MOBILE APP द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा विकसित तकनीकी, प्रजातियॉ विकास आदि की जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है। KISAN SUVIDHA MOBILE APP द्वारा जलवायु, पादप संरक्षण, कृषि उत्पाद डीलर, बाजार एवं कृषि परामर्श सेवाओं की जानकारी, CROP INSURANCE MOBILE APP द्वारा फसल बीमा से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी, AGRI MARKET MOBILE APP द्वारा 50 किमी0 की परिधि मे बाजार भाव की जानकारियां सुगमता से प्राप्त की जा सकती है।

भारत सरकार द्वारा FARMERS' PORTAL जिसमें बीज खाद उर्वरक, कीटनाशकों, क्रेडिट, कृषि डीलरों की नवीनतम जानकारियों, m Kisan Portal टैक्सट एवं वॉईस लक्षित जानकारियों, CROP MANAGEMENT PORTAL पर फसल बीमा, सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारियों, Participatory Gurantee System of India (PGS) Portal पर सहभागी प्रोग्राम एवं जैविक खेती हेतु प्रमाण पत्र आदि की जानकारियों को बड़ी ही सहजता के साथ प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा किसान काल सेन्टर पर निःशुल्क कृषि से सम्बन्धित जानकारियां प्राप्त की जा सकती है। किसानों की आय में वृद्धि एवं जीविकोपार्जन में सुधार हेतु भारत सरकार द्वारा कई महत्वाकांक्षी योजनाओं को प्रारम्भ किया गया है इसमें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, मिसन फार इंटीग्रेड डेवलपमेंट आफ हार्टीकल्चर स्कीम, ग्रामीण भण्डार योजना, राष्ट्रीय गोकुल मिसन, स्टूडेण्ट रेडी, आर्या, फारमर फस्ट प्रमुख हैं अभी हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी ने किसान उत्पादक संगठनों (FPO) के नेटवर्क एवं किसान रेल की शुरूआत की है। इससे किसानों को अपने उत्पादों का उचित मूल्य मिलने में बड़ा सहयोग मिला है।

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन की मानव लालसा ने पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ने की दिशा में एक बड़ी भूल की है। जिसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में प्राकृतिक आपदाये जैसे बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन अति–वृष्टि, अल्प–वृष्टि, अनियन्त्रित, असंतुलित वर्षा पैटर्न तथा जैविक आपदाओं में कोरोना महामारी तथा टिड्डियों का आक्रमण, हमारे सामने ज्वलन्त उदाहरण आने लगे हैं। आज हमें पर्यावरण को संरक्षित, संवर्धित एवं समर्पित करना ही होगा वरना आने वाली नस्लें हमें कभी माँफ नही कर पायेगी। हमारा अटूट विश्वास है कि इस कार्य में हमारे

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन

कृषक बन्धु सदैव से अपना योगदान देते आये हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी की पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन के प्रति गहरी सोच, संवेदना एंव आवाहन की कड़ी में अपने कृषक बन्धुओं, अधिकारियों, कर्मचारियों छात्र–छात्राओं से अनुरोध करता हूं कि इसकी दिशा में स्वंय का ही योगदान नही अपितु जन सहभागिता को भी प्रेरित करने का कार्य करें। जल संरक्षण के क्षेत्र में Per drop more crop यानि प्रतिबूंद पानी से अधिक फसल अवधारणा को साकार करना ही होगा। जल संरक्षण तकनीकी के अन्तर्गत प्रत्येक खेत की मेंड बन्दी, खेतों के आस–पास छोटे–2 तालाब, कुँओं, फसल उत्पाद की आधुनिक सस्य तकनीकी एवं सिचाई पद्धति को अपनाना होगा। आज हमें प्रत्येक गांव में न्यूट्रीफार्मिग, न्यूट्रीगार्डनिंग के साथ ही climate smart village जलवायु स्मार्ट गांव की दिशा में अपने अनुसंधान एवं प्रसार कार्य को अपने मुख्य एजेण्डा में लेना आवश्यक है। हमारे विश्वविद्यालय ने इस दिशा में अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। पर्यावरण के प्रति छात्रों की सकारात्मक सोच एवं समर्थन के लिए हमने तय किया है, कि प्रत्येक छात्र–छात्राओं को प्रति सेमेस्टर कम से कम एक पौधा अवश्य लगाने के साथ ही उसकी देखभाल करना अनिवार्य होगा और इसे उनकी प्रयोगात्मक परीक्षा में सम्मिलित कर कुरीकुलम का अंग बना दिया जायेगा। इस वर्ष नव–प्रवेषित छात्र–छात्राओं के पठन–पाठन की शुरूआत उनके द्वारा अपने नाम से एक पौधे के रोपण से ही होगी। एन0सी0सी0, एन0एस0एस0 के छात्र छात्रायें अपनी शुरूआत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गये गांवों से करने का भी विश्वविद्यालय द्वारा निर्णय ले लिया गया है।

शोध

- विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों में अब तक 290 से अधिक उन्नतशील प्रजातियां विकसित करने का कीर्तिमान स्थापित किया गया है, जो कृषकों में काफी लोकप्रिय है तथा उत्पादन बढ़ाने में विशेष योगदान प्रदान कर रही है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूँ में उजियार नेपाल में लोकप्रिय है, के दृष्टिगत नेपाल गणराज्य द्वारा इस प्रजाति को आयुच्युता के नाम से अंगीकृत किया है। गेहूँ में देवा प्रजाति बांग्लादेश में तथा मसूर में मलिका प्रजाति दक्षिण कोरिया में अधिक क्षेत्रफल पर बोयी जा रही है।

- विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों में एक, तोरिया में एक, मूंग में एक, मसूर में एक व अलसी में एक कुल पांच प्रजातियों के Notification हेतु प्रस्ताव Central Sub-committee on crop standards, Notification and Release of Varieties for Agricultural Crops कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन नई दिल्ली को प्रेषित किये गये हैं।

- विश्वविद्यालय में नवीनतम रूप से जैव प्रौद्योगिक विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिक मंत्रालय, भारत सरकार परियोजनायें Evaluation of Linseed Germplasm for major biotic stress (Alternaria blight), Evaluation of Linseed Germplasm for major biotic stress (Salt stresses), Wide hybridization and genetic enhancement, Phenotygping of entrie linseed germplasm collection conserved at National gene bank for agro-morphological trails, Design and development of autonomous robot for crop monitoring and localised pest Neutralisation धनराशि रू 272.4842 लाख की स्वीकृति हुई है, जिनके परिणामों से विद्यार्थी एवं कृषक लाभान्वित होंगे।

- कोराना अवधि में विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं वैज्ञानिकों ने 20 शोध पत्रों को विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जनरर्लस जिनकी नास रेटिंग 6 से अधिक है, में प्रकाशित किये गये है।

- विश्वविद्यालय को आई0सी0ए0आर0 द्वारा Centre for Advanced Agricultural Sciences & Technology on Nutritional Crops परियोजना के अन्तर्गत कोविड महामारी के कारण लॉकडाउन के दौरान पांच राष्ट्रीय वेबिनार तथा दो ऑनलाइन राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, तीन नेशनल ट्रेनिंग आयोजित किये गये जिसमें एम0एस0सी0 व पी0एच0डी0 के छात्रों उद्यमियों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा संकाय सदस्यों ने प्रतिभाग किया।

- प्रदेश सरकार द्वारा 02 सेन्टर आफ एक्सीलेन्स गेहूँ एवं शाकभाजी परियोजनाएं स्वीकृत हुई है जिनके अन्तर्गत गेहूँ एवं शाकभाजी फसलों में बदलते मौसम हेतु उपयुक्त प्रजाति विकास व सस्य तकनीक विकास पर शोध संसाधन विकसित कर अनुसंधान को नई दिशा दिये जाने के प्रयास किये जा रहे है, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि कर कृषकों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा।

- विश्वविद्यालय में शोध संसाधन सृजन हेतु विभिन्न वित्तीय संस्थाओं को रू0 4447.00 लाख धनराशि की परियोजनायें प्रेषित की गई है, जिससे विश्वविद्यालय में उक्त विषयों पर शोध में आशातीत गति प्रदान करने में मदद मिलेगी।

- विभिन्न विभागों से 26 वैज्ञानिकों/शिक्षकों को देश – विदेश के विभिन्न संस्थानों में सेमीनार/सेम्पोजिया में शोध पत्र प्रस्तुत करने हेतु नामित किया गया।

- विश्वविद्यालय में स्थापित डेयरी के जीर्णोद्वार एवं डेयरी तकनीकी के प्रचार–प्रसार व शोध कार्यो को बढ़ावा देने हेतु Tasty Dairy, Kanpur से Memorandum of Understanding से किया गया।

- अरहर की बुवाई 15 सितम्बर पर करने से अधिक उपज 11.00 कु0/हे0 तक प्राप्त की गई हैं।

- बाजरा–चना फसल पद्धति में गोबर की खाद 7.5 टन/हे0 के हिसाब से प्रयोग करने से अधिकतम उपज प्राप्त की गई हैं।

- Metsulfuron+Carfentrazone (Redy Mix) का 50 ग्राम/हे0 की दर से प्रयोग गेहूँ में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण में लाभकारी पाया गया हैं।

- वर्तमान वित्तीय वर्ष विश्वविद्यालय को प्राइवेट एजेंसी द्वारा इफीकेसी टेस्टिंग (Efficacy Testing) के अन्तर्गत संस्थागत चार्ज के रूप में लगभग रू0 24.00 लाख का राजस्व भी प्राप्त हुआ।

प्रसार

कोरोना काल में उत्पन्न कृषि आधारित समस्याओं को हमनें कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण युवकों के कौशल विकास, कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग व व्यवसाय विकसित कर कृषि विकास का आधार तैयार करने की दिशा में कार्य किया है, विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञ सीधे किसानों से समन्वय स्थापित कर इस कठिन परिस्थिति में भी परामर्श सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्दों द्वारा पोषक गृह वाटिका पर ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित कर बीज उपलब्ध कराये जा रहे हैं जिससे कृषक परिवारों का पोषण सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। हमारे किसानों को मौसम में अचानक आ रहे बदलाव के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ता है। कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाओं द्वारा कृषि पूर्वानुमान उपलब्ध कराने से विश्वविद्यालय कार्य क्षेत्र के कृषक लाभान्वित हो रहे हैं।हमनें इन विषम परिस्थितयों में कानपुर जिला प्रसाशन को गरीब एवं बेसहारा लोगों के भरण पोषण हेतु 40 कुन्तल गेहूं उपलब्ध कराया है, साथ ही विश्वविद्यालय में विभिन्न निर्माण कार्यों से लगे अप्रवासी श्रमिकों को भोजन आदि की व्यवस्था हेतु जनता रसोई प्रारम्भ की। विश्वविद्यालय ने स्मार्ट हैंण्डवॉश एवं लो कास्ट सैनेटाइजेशन टनेल का निर्माण करके विश्वविद्यालय के परिसर में स्थापित किया गया जिससे विश्वविद्यालय परिसर को कोविड–19 महामारी से सुरक्षित रखने की दिशा में अग्रणी कार्य किया है।

किसान भाईयों की आमदनी बढाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संरक्षित खेती को बढावा दिया जा रहा है कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण आयोजित करके प्रशिक्षित कृषकों द्वारा पाली हाउस एवं नेट हाउस के माध्यम से वर्ष भर कीमती सब्जी उत्पादन करके अधिक आमदनी प्राप्त कर रहे है। लाक डाउन के दौरान कृषकों को औद्यानिक उत्पादन को विक्रय करने के दौरान कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसान रथ एप के माध्यम से कृषक अपना उत्पाद बेचने में सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर माननीय कुलपति महोदय का उद्बोधन

कृषि क्षेत्र में देश का प्रथम राष्ट्रीय वेबकान का शानदार आयोजन दिनांक 6 से 8 मई, 2020 तक किया गया। प्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमती आनन्दीबेन पटेल जी एवं कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही जी समेत देश के दिग्गज कृषि विशेषज्ञों ने आनलाइन अपने संदेश साझा किये। उद्घाटन के अवसर पर मुख्य वक्ता पद्म भूषण प्रो0 राम बदन सिंह जी ने आधुनिक कृषि परिकल्पना की चर्चा की। उन्होंने इस अवसर पर 'स्वस्थ्य धरा तो क्राप हरा' का नारा देते हुये मृदा की सेहत सुधार के लिये जीवांश कार्बन के उपाय करने पर जोर दिया। इस दौरान देश के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों, शिक्षाविद्ों, नीतिनिर्धारकों ने अपने विभिन्न व्याख्यानों, की–नोट एड्रेस द्वारा कृषि उत्पादन एवं सहयोगी प्रणाली के मजबूतीकरण एवं भावी योजना पर प्रस्तुती दी। विभिन्न विषयों पर 7 वेविनार एवं 2 ऑनलाइन ऑनलाइन ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजन भी किया गया। ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से पठन–पाठन द्वारा सभी शेष पाठ्क्रमों को पूरा किया गया है। साथ ही जे0आर0एफ0 एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता हेतु प्रत्येक विषय के 500 बहुविकल्पी क्वेस्चन बैंक तैयार की गयी है।

भावी योजनाऐं

अब मैं CSA की भावी योजनाओं पर प्रकाश डालना चाहूँगा। जिससे हम कृषि उत्पादन एवं सहयोगी तन्त्र को मजबूती प्रदान करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर अपने आपको स्थापित कर सकें। इसमें हमें प्रसिजन एग्रीकल्चर, प्रोटेक्टिव एग्रीकल्चर, क्लाइमेट स्मार्ट नेचुरल रिर्सोस मैनेजमेन्ट, क्लाइमेट स्मार्ट विलेज, स्ट्रेस, टारगेटेड एवं न्यूट्रीसन रिच प्रजातियों के विकास के साथ ही ड्रोन एवं नेनो टेक्नोलॉजी विकास प्रमुखतः एजेण्डा में होगें। कृषि व्यवसाय प्रबन्धन में विशेषज्ञों की मांग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी है। इसे गति देने के लिए इंस्टीट्यूट/कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर बिजनेस मैनेजमेन्ट एवं पशु चिकित्सा की जरूरतों को पूरा करने के लिए College of Veterinary Science की स्थापना का प्रस्ताव विद्वत परिषद द्वारा पारित कर दिया है। इसे बोर्ड ऑफ मैनेजमेन्ट में पास कराकर शीघ्र शासन को प्रस्तुत किया जायेगा।

E-course Certificate Programme on/off line ABM विभाग एवं मशरूम में शीघ्र प्रारम्भ कर दिया जायेगा। छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व विकास एवं अंग्रेजी भाषा में उत्क्रष्टता हेतु कुछ कोर्स डिजाईन कर लिये गये हैं। इन्हें शीघ्र प्रारम्भ करने का प्रस्ताव भी प्रबन्ध मण्डल द्वारा अनुमोदित करा लिया जायेगा। छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु शॉर्ट टर्म कोर्स संचालित किये जायेंगें। ये कोर्स पॉच दिन, एक सप्ताह और एक महीने तक चलेंगे। इसके लिये विश्वविद्यालय प्रशासन किसी तकनीकी व निजी संस्थान से करार करेगा। डिजिटल डॉकूमेंटेशन, प्लान्टेशन, जैविक खेती, एग्रोफॉरेस्ट्री सिस्टम, पुस्तकालय सुदृढ़ीकरण एवं राजस्व अर्जन आदि भी मुख्य एजेण्डा में रहेंगे।

विश्वविद्यालय हरित कैम्पस बनाने के ऊपर फोकस करते हुये इको–क्लब बनाकर छात्र–छात्राओं की सहभागिता को बढ़ाये जाने, ऑनलाइन प्लेसमेंट, छात्र–छात्राओं को अधिक से अधिक फॉरेन डेपुटेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम में भेजने पर विशेष बल दिया जायेगा। इसके साथ ही स्टूडेन्ट सेंन्ट्रिक, फारमर्स सेंन्ट्रिक एवं पीपुल्स सेंन्ट्रिक, शोध, शिक्षण एवं प्रसार को प्राथमिकता में लाया जायेगा।